an>

Title: Regarding welfare of the farmers growing sugarcane.

डॉ. भोला सिंह (बेगूसराय) : अध्यक्ष महोदया, आपकी सदाशयता के लिए मैं आभार प्रकट करता हूं। बिहार कभी औद्योगिक विकास के क्षेत्र में वÂाऩ 1960 के पूर्व तक फूलता-फलता रहा है, लेकिन वÂाऩ 1960 के बाद राजनीतिक सत्ता की आकृति ने उसके जीवन में जहर घोलकर रख दिया है। अब वहां उद्योग धंधे नहीं, किसानों के पसीने की कीमत नहीं, बल्कि जातीयता, साप्रदायिकता और घात-प्रतिघात की फसलें बोई जा रही हैं। सन् 2014-2015 में गेहूं की फसल भयानक रूप से मारी गई है। गेहूं का जो भी उत्पादन हुआ, उसे सरकार ने नहीं खरीदा। बिहार गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में एक जमाने में उत्तर प्रदेश से बढ़ा-चढ़ा था। वहां पर 42 चीनी मिलें थीं, लेकिन आज आठ का भी चलना मुश्किल हो रहा है। पिछले तीन-चार वÂााों से गन्ना किसान एक तरह से मृत्यु शैया पर पड़े हुए हैं। उनकी लाडली बिटिया सुहाग के सिंदूर के लिए अपनी आंखों में आंसू लिए पड़ी हुई है। गन्ना किसानों का बिहार और बेगूसराय की चीनी मिलों पर हजारों करोड़ रुपया बकाया पड़ा है। चीनी मिल मालिकों ने बेगूसराय के गन्ना किसानों को साफ कह दिया है कि आगामी सत्र से वे किसानों का गन्ना नहीं खरीदेंगे, क्योंकि उनके लिए यह लाभप्रद नहीं है। गन्ना किसानों के 60 प्रतिशत रुपए अभी तक चीनी मिल मालिकों पर बकाया हैं। वे भुगतान करने में असमर्थ हैं । उनका कहना है कि जब तक गन्ने से एथेनॉल उत्पादन करने की अनुमति नहीं मिलेगी, वे किसानों से गन्ना नहीं खरीदेंगे। गन्ना किसान अपने भविÂय को लेकर मूर्छित पड़े हैं। राज्य सरकार की हेकड़ी अलग दुखदाई है। केन्द्र सरकार का समय-समय पर सूद मुक्त ऋण आबंटित करना भी उन्हें अब तक राहत नहीं पहुंचा पाया है। वास्तव में राज्य एवम् राÂट्रीय स्तर पर गन्ना किसानों के लिए कोई स्पÂट नीति नहीं है। किसान का वर्तमान और भविÂय भी लहूलुहान दिखाई पड़ रहा है। इस देश में मनिÂिायों ने किसान को भगवान तक कहा। लेकिन आज वह भगवान खेत और खलिहानों में नहीं है, वह मंदिरों और मस्जिदों में परम्परागत आस्था बनकर रह गया है। हम भारत सरकार के गन्ना मंत्री और विशेÂाकर प्रधान मंत्री जी से आग्रह करते हैं कि समाज के हर वर्ग के लिए आपका जो समर्पित जीवन है, वह किसानों के लिए भी देवतास्वरूप दिखाई पड़े, उन्हें मृत्यु शैया से उठाकर जीवन ज्योति जलाने के लिए अवसर प्रदान करें। इस ओर मैं सरकार का ध्यान सदन के माध्यम से आकृÂट करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरों प्रसाद मिश्र, श्री पी.पी. चौधरी और कुमारी शोभा कराण्डलाजे को डॉ. भोला सिंह द्वारा उठाए गए विÂाय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

सत्यपाल सिंह जी, आप भी गन्ना किसान की बात करना चाहते हैं।